और मसल है, कि जो बिलाव अपने बच्चे को खाता है सो चूहे को कब छोड़ेगा. फिर कहने लगा कि जिन्हों ने बालकपन में बिद्या न पढ़ी, और जवानी में काम से आतुर हो यौवन के गर्व में रहे; सो वृद्धकाल में पछताकर हिरस की आग में जलते हैं.

यह बात सुन, उन चारों ने आपस में बिचारकर कहा कि बिद्याहीन पुरुष के जीने से मरना भला है. इस से उत्तम यह है, कि बिदेस में जाकर बिद्या पढ़िये. यह बात आपस में ठान, वे एक और नगर में गये. और कितनी एक मुद्दत के बअ़्द, पढ़के पंडित हो, अपने घर को चले. राह में देखते क्या हैं, कि एक कंजर मुए हुए शेर की हड्डी, चमड़ा जुदाकर, गठड़ी बांध चाहे कि ले जाय; इस में उन्हों ने आपस में कहा कि आओ अपनी अपनी बिद्या आज़मावें. यह ठहरा, एक ने उसे बुलाकर कुछ दिया, और वह पोट ले उसे बिदा किया. और रस्ते से कनारे हो, उस पोट को खोल, एक ने सारी हड्डियां जा बजा लगा, मंत्र पढ़ छींटा मारा, कि वे हाड़ लग गये. दूसरे ने इसी तरह उन हड्डियों पर मास जमा दिया. तीसरे ने इसी भांति से मास पर चाम बिठा दिया. चौथे ने इसी रीत से उसे जिला दिया. फिर वह उठते ही इन चारों को खा गया.

इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा! उन चारों में कौन अधिक मूरख था? राजा बिक्रम ने कहा, जिस ने उसे जिला दिया सोई बड़ा मूरख था. और ऐसा

कहा है कि बुद्धि बिना बिद्या किसू काम की नहीं. बल्कि बिद्या से बुद्धि उत्तम है. और बुद्धिहीन इसी तरह मरते हैं, जैसे सिंह के जिलानेवाले मुए. यह बात सुन, बैताल उसी दरख़्त पर जा लटका. फिर राजा उसी तरह बांध कांधे पर रख ले चला.

बाईसवीं कहानी

बैताल बोला ऐ राजा! बिस्वपुर(१) नाम नगर. वहां का बिदग्ध नाम राजा. उस के नगर में नारायण नाम ब्राह्मण था. वह एक दिन अपने मन में चिन्ता करने लगा, कि मेरा शरीर वृद्ध हुआ. और मैं दूसरे की काया में पैठने की बिद्या जानता हूं. इस से बिहतर यह है, कि इस पुरानी देह को छोड़, और किसू जवान के शरीर में जाके भोग करूं. जब वह यह अपने जी में बिचार कर चुका, और एक तरुन शरीर में पैठने लगा, तो पहले रोया, और पीछे हंसा; फिर उस में पैठके अपने घर में आया. लेकिन इस के सारे कुटुंब के लोग उस के करतब से वाक़िफ़ थे. फिर उन के आगे कहने लगा कि मैं अब योगी हुआ.

इतना कहके पढ़ने लगा आसा के सरोवर को तपस्या के तेज से सुखा, तिस में मन को रख, इंद्रियों को सिथल करे, सो योगी चतुर कहावे. और यह गति संसार के

(१) विश्वपुर.

लोगों की है कि अंग गले, मुंड हिले, दांत गिरें, बूढ़े हो लाठी ले फिरें, तौ भी तृष्णा नहीं मिटती. और इसी तरह से काल चला जाता है. दिन ऊआ, रात ऊई, महीना ऊआ, बरस ऊआ, बालक ऊआ, बूढ़ा ऊआ, और कुछ नहीं मअलूम कि मैं कौन हूं, और लोग कौन हैं, और कौन किस लिये किसू का सोग करता है. एक आता है, एक जाता है, और अंत काल सब जी जानेवाले हैं; इन में से एक न रहेगा. अनेक अनेक अंग हैं, और अनेक अनेक मन हैं, और अनेक अनेक मोह हैं, भांति भांति के पाखंड ब्रह्मा ने रचे हैं. पर बुद्धिमान इन से बच, आसा और तृष्णा को मार, सिर मुड़ा, हाथ में दंड कमंडल ले, काम क्रोध को मार, योगी हो, नंगे पांव तीर्थ तीर्थ डोलते फिरते हैं, सो मोक्ष पदार्थ पाते हैं. और यह संसार सुपने की तरह है. इस में किस की खुशी कीजिये, और किस का गम. और केले के गाभे की तरह संसार है. इस में सार कुछ नहीं. और धन, जोबन, बिद्या का जो गर्व्व करते हैं, सो अज्ञान हैं. और जो योगी हो, कमंडल हाथ में ले, बार बार भीख मांग, दूध, घी, चीनी से अपने शरीर को पुष्टकर, कामातुर हो, स्त्री से भोग करते हैं, सो अपना योग खोते हैं. इतना पढ़कर वह बोला कि अब मैं तीर्थ यात्रा करूंगा. यह बात सुन, उस के कुटुंब के लोग बहुत खुश हुए.

इतनी कहानी कह, बैताल बोला ऐ राजा! किस कारन वह रोया, और किस कारन हंसा? तब राजा ने कहा

कि बालकपन का मा का प्यार, और जवानी का सुख, याद कर, और इतने दिनों उस देह के रहने के मोह से रोया, और अपनी बिद्या सिद्ध करके, नई काया में पैठके खुशी से हंसा. यह बात सुन, बैताल उसी पेड़ पर जा लटका. फिर राजा उसी तरह से बांध कांधे पर रख ले चला.

तेईसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! धर्मपुर नाम नगर. वहां का धर्मज नाम राजा. उस के शहर में गोविंद नाम ब्राह्मण चारों बेद छहों शास्त्र का जाननेवाला था, और अपने धर्म कर्म से सावधान. और हरिदत्त, सोमदत्त, यज्ञदत्त, ब्रह्मदत्त उस के चार बेटे थे. बड़े पंडित, बड़े चतुर, और अपने बाप की आज्ञा में सदा रहते थे. कितने एक दिन पीछे, बड़ा बेटा उस का मर गया. और वह भी उस के दुख से मरने लगा.

तिस समैं वहां के राजा का पुरोहित बिष्णुशरमा(१) आनकर उसे समझाने लगा कि यह मनुष जिस समैं मा के गर्भ में आता है, पहले वहीं दुख पाता है; दूसरे जवानी में काम के बस हो, प्रीतम के बियोग से ईजा सहता है; चौथे बूढ़ा हो, अपने शरीर के निरबल होने से, अजीयत

(१) विष्णुशर्मा.